राजा नंग–धड़ंगा है

एक राजा था रंगीन बहुत
और कपड़ों का शौक़ीन बहुत।

सौदागर आते बहुतेरे,
दिन–रात लगाते थे फेरे।

थे भरे पड़े रेशम, मख़मल
और बढ़िया ढाके की मलमल।

कपड़ा जो कुछ भी आता था
सब हाथों–हाथ बिकाता था।

पोशाक नई सिलवाता था
औः फूला नहीं समाता था।

पर फिर भी रूह भटकती थी,
परजा को बात खटकती थी।

यह राजा कुछ दीवाना है,
कपड़ों का कोई ठिकाना है?

कितने अंबार लगायें हैं,
कपड़ा ही दाएं–बाएं है।

पर राजा को बीमारी थी,
कपड़े की हाजत जारी थी।

दो गुंडों ने मौक़ा पाया,
दरबार में धमके, फ़रमायाः

कपड़ा नायाब बनाते हैं,
जौहर उसमें दिखलाते हैं,

सोने की तारें चुनते हैं,
हम उनसे कपड़ा बुनते हैं।

चांदी की वह गुलकारी हो
कि लट्टू दुनिया सारी हो।

वह रंग अनोखे लाएंगे
कि फूल तलक शर्माएंगे।

इस कपड़े में जो टोना है
सो चांदी है न सोना है।

बस अक़्ल ही जिसने पाई है
देता उसको दिखलाई है।

राज को फांसा चक्कर में,
था जादू उनके मक्कर में।

सोने–चांदी के ढेर लगे,
वह सेरों के ही सेर लगे।

इक कोठा सारा अपनाया,
सामान उसी में धरवाया।

क्या कहने ख़ातिरदारी के,
थे ठाठ वहां सरकारी के।

लेते जाते थे मनमाना,
था मना मगर अंदर आना।

थोड़ा कपड़ा बुन लें भाई,
जिससे कुछ दे तो दिखलाई।

कल शाम तलक कुछ हो जाए,
जिसका मन हो, बेशक आए।

यूं करते–करते रात हुई,
कल पर ही सारी बात हुई।

फिर कल भी तो आख़िर आया,
वज़ीर राजा ने भिजवाया,

जो लपक के पहुंचा कोठे में,
था अजब तमाशा कोठे में।

बस खड्डी सूनी–सूनी थी,
तिस पर यह हैरत दूनी थी,
जो स्यार थे दोनों रंगे हुए
ख़ाली खड्डी पर टंगे हुए।

वह मस्त थे कपड़ा बुनने में,
कुछ रंग लगाने, चुनने में।

न चांदी थी न सोना था,
ख़ाली कमरे का कोना था।

वज़ीर खड़ा भौंचक्का था,
दिल को कुछ पहुंचा धक्का था।

सोचा यह बात बनी कैसी?
यह ताना और तनी कैसी?

कपड़े की दिखती शक्ल नहीं,
क्या सचमुच मुझमें अक़्ल नहीं?

गुंडों ने आंख ज़रा मारी,
शोखी थी जिसमें, मक्कारी,

फिर धीरे से यह फ़र्माया:
कपड़ा हजूर के मन भाया?

उंगली के एक इशारे से
वह रंग दिखाते प्यारे–से।

यह देखो नया नमूना है,
मढ़ा यह सोना दूना है।

वज़ीर खड़े थे मुंह बाए,
था सोच – कहा अब क्या जाए?

फिर बोल उठे कि क्या कहने!
सज जाए वो ही जो पहने।

हिकमत तो ख़ूब दिखाई है,
क्या ग़ज़ब की चीज़ बनाई है!

यह गंगा जमनी तारे हैं,
क्या रंग जमाए प्यारे हैं!

वज़ीर राजा के पास गए,
कुछ लेकर होशहवास नए।

कपड़ा जनाब निराला है,
वह आला से भी आला है।

सोने के फूल बनाए हैं,
जैसे गुच्छे लटकाएं हैं।

फिर पहुंचे सब बारी–बारी
पर देख न पाए गुलकारी।

था साफ़ चटा मैदान पड़ा,
हर कोई था हैरान बड़ा।

कुछ कहते बन नहीं आती,
और अक़्ल अलग थी चकराती।

तारीफ़ों के पुल बांध दिये,
एक–एक को मांद किये।

तब आई बारी राजा की,
रौनक़ थी सारी राजा की।

वह आंखें धर–धर मलता था,
पर बस नहीं कुछ चलता था।

कपड़े का नाम–निशान नहीं,
सोना–चांदी सामान नहीं।

खड्डी तो बिलकुल ख़ाली थी,
गुंडों ने ख़ूब सम्हाली थी।

बुनते दिखते ताना–बाना,
क्या मैं ही नहीं रहा दाना?

फिर लानत इस राजाई पर,
हाकिम हूं अक़्ल पराई पर।

जो परजा बुद्धू जानेगी,
क्या रोब हमारा मानेगी?

बस बोल उठा – क्या कहने हैं!
कपड़े तो बेशक पहने हैं,

पर इसकी रास नहीं करते,
दिखते सब पानी ही भरते!

कपड़ा बन कर तैय्यार हुआ,
गुंडों का बेड़ा पार हुआ।

वह बिदा हुए, रूख़्सत मांगी,
दम लेने की फुरसत मांगी।

तब आई बारी दर्ज़ी की,
पोशाक बताई मर्ज़ी की।

न कपड़ा था न लत्ता था,
सीने बैठा अलबत्ता था।

वह यूं ही ब्योंत लगाता था,
फिर क़ैंची यूं ही चलाता था।

फिर जामा सिलना शुरू हुआ,
वह दोनों का भी गुरू हुआ।

हवा को सुई चुभोता था,
तागे को यूं ही पिरोता था।

कपड़े सी सी कर धरता था,
यह अचकन थी, वह कुरता था।

यूं ही पोशाक बनी सारी,
मिटी अड़चन वह भी भारी।

राजा की सालगिरह आई,
ये ही पोशाक गई लाई।

यह कुर्ता है, यह पैजामा,
यह ऊपर का लीजे जामा।

था पास खड़ा आईने के,
कपड़े थे अजब क़रीने के।

मन में चकराया जाता था,
सुकड़ा शर्माया जाता था।

ख़ुद दरबारी भौंचक्के थे,
कहते वाह–वाह उचक्के थे।

अब शहर सवारी जाएगी,
परजा सब वारी जाएगी।

थे अक़्ल के राजा बेढंगे,
चल निकले नंगे के नंगे।

बोले हम पैदल जाएंगे,
कपड़े सबको दिखलाएंगे।

कुछ टोह मिले दानाई की,
किस किसने खरी कमाई की।

जिसमें पाऊंगा अक़्ल नहीं,
फिर से देखूंगा शक्ल नहीं।

फिर साथ लिए सब दरबारी,
सब वर्दी पहने सरकारी,

बीचों बीच में राजा था,
और आगे शाही बाजा था।

यूं निकला कारवां सबका,
नज़ारा ख़ुशनुमा सबका।

लोगों के भीड़–भड़क्के थे,
लगते धक्कों पर धक्के थे,

कोई मुंह को फाड़े देता था,
कोई आंखें गाड़े देता था।

न दिखता कुर्ता–पैजामा,
न ऊपर का ही वह जामा।

सारा ही ढंग कुढंगा था,
राजा तो बिलकुल नंगा था!

पर कहते मुंह से कुछ कैसे,
क्यों कहलाते ऐसे–तैसे?

सब वाह–वाह करते जाते
दम यूंही थे भरते जाते।

इक बच्चा आया छोटा–सा,
गोरा–गोरा और मोटा–सा।

राजा उसने देखा ज्यों ही,
ताली पीटी, बोला त्यों हीः

बहती उलटी गंगा है,
अब राजा नंग–धड़ंगा है!

गोरा शैतान

दूर एक देश की न्यारे
सुनो कहानी, बच्चों प्यारे।

गर्मी पड़ती है तूफ़ान,
दूर तलक चटियल मैदान।

लोग यहां के हब्शी काले,
नरम ऊन से बालों वाले,

देश में थे अपने ख़ुशहाल,
चलते सीधी–सादी चाल।

खोट कपट से थे अनजान,
पढ़ने–लिखने में अज्ञान।

वहां सात समन्दर पार
करने को अपना व्योपार

बजरा लेकर आलीशान
पहुँच गया गोरा शैतान।

जम कर बैठा सड़क किनारे,
खोले अपने बकस पिटारे।

वहीं खेलते हब्शी बच्चे,
भोले–भाले अच्छे सच्चे।

नाम अनोखे मम्बो–जम्बो
और कहाता कोई सैम्बो।

बजरा सब ने देख जो पाया,
जादू का घर तैर के आया।

देख–देख हुए हैरान,
पानी में घर – क्या ही शान!

मिल कर आए दौड़े–दौड़े,
रस्ते नापे लम्बे–चौड़े।

गोरे देखे इतने सारे
भौंचक्के हो गए बिचारे।

नहीं कभी देखे थे पहले
गोरी चमड़ी वाले छैले।

देव–लोक से आए हैं क्या?
खेल–खिलौने लाये हैं क्या?

या हैं जादूगर यह भारी,
जन्तर–मन्तर भरे पिटारी?

गोरे–गोरे भूरे भट्ट,
बोल रहे हैं क्या गट–पट्ट!

दूर खड़े कुछ देर झिझकते,
डरते–डरते पास खिसकते।

गोरों ने थोड़ा चुमकारा,
इतना जो मिल गया सहारा,
पहुँच गये उनके नज़दीक,
जादू बैठा ठीकम ठीक।

सस्ते कांच का सब सामान
गोरों की अद्भुत दूकान।

नक़ली मोती रंग–बिरंगी,
पों–पों बाजे और सरंगी,

चम–चम करते कैसे हार,
लगा अचम्भे का भंडार।

बच्चे देखें मुंह को फाड़े,
टुकर–टुकर सब आंखें गाड़े।

यह परदेसी थे शैतान,
गाढ़ी और करी पहचान।

हाथ किसी को दिया छनकना
और किसी को बंदर नचना।

बच्चों को कर दिया निहाल
सौदागर ने फंदे डाल।

कौड़ी फेंक जो सोना पाए,
क्यों न कौड़ी ख़ूब लुटाए?

बात गई फिर यह भी ठैर,
कल होगी बजरे की सैर।

बच्चे घर को आए लपकते,
काले मुखड़े ख़ूब दमकते।

लिये हुए सारे सौग़ात
भोली–भाली करते बात।

समझ न पाए भोले बाल,
सिर पर खेल रहा है काल।

सुबह मिल कर सब हमजोली
बनी एक बड़ी–सी टोली।

पहुँचे वहीं पर सब आन
टिका जहां गोरा शैतान।

एक–एक कर नम्बरवार
बजरे पर कर दिये सवार।

ख़ूब चली गोरे ने चाल,
छिन भर में बस मालामाल!

बड़े प्यार से उन्हें बिठा
लंगर चट से दिया उठा।

बजरा ज्यों–ज्यों आगे जाए
बच्चे मन ही मन घबराए।

गया किनारा अपना छूट
घर वालों से नाता टूट।

सहमी हुई डबाडब आंखें
चुपके–चुपके पानी झांकें।

नहीं दीखता घर और द्वार,
पानी ही पानी उस पार।

सब ख़ुशियों पर पड़ गई ओस,
मन को रह गये वहीं मसोस।

झर–झर आंसू ढरके जाएं,
सब गोरों की होड़ें खांएं।

हम को अब दो घर पहुँचा,
देर हुई रोएगी माँ।

होती वहां किसकी सुनवाई?
भेड़ें लेकर चले क़साई।

किसी को मारा घूंसा तान,
किसी को घुड़का, सूखे प्राण।

सूख गया आंखों का पानी,
सिर पर भारी विपदा जानी।

बीते कितने ही दिन–रात,
लांघ गये समन्दर सात।

पहुँचे एक अनोखे देस,
मन पर और लगी अब ठेस।

गोरे लोगों का संसार
दीख पड़ा जैसे अंगार।

नन्हें दिल धड़कते जाएं,
डर के मारे सब अकुलाएं।

बजरे से सब दिए उतार,
एक–एक को धक्के मार।

चौरस्ते पर लेकर आए,
हाथों–हाथ सब गए बिकाए।

रहा–सहा भी छूटा साथ,
कौन पकड़ता किसका हाथ?

बिना दाम के बने ग़ुलाम,
कैसा सुख कैसा आराम?

नन्हीं जानें काम पहाड़,
मालिक की दिन–रात दहाड़।

बात–बात पर कोड़े खाएं,
काले कुत्ते नित कहलाएं।

एक बार ले जाकर चोर
फिर ना लाया घर की ओर।